an>

Title: Need to provide training facilities to youth of Uttarakhand for Armed and Paramilitary forces.

**डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार):** महोदया, आपको मालूम ही है कि समूचा हिमालय क्षेत्र आंतरिक सुरक्षा, संस्कृति, पर्यावरण के कारण से अत्यंत संवेदनशील है और उसमें भी उत्तराखंड देश के लिए गौरवशाली थांती के रूप में है, जहां जनसंख्या का कुल सात प्रतिशत लोग सेना में भर्ती हो कर राष्ट्र की सीमाओं में कुर्बानी देते हैं और 1 लाख 20 हजार से भी अधिक पुरूष सैनिक हैं जबकि 32363 से भी अधिक यहां विधवाएं हैं। मैं कहना चाहता हूं कि देश की आजादी से पहले की बात हो या विक्टोरिया-I विश्व युद्ध वर्ष 1914 में विक्टोरिया क्रास नायक दरबान सिंह हों, चाहे वहीं प्रथम विश्व युद्ध 1914 में रायफल मैन शहीद गब्बर सिंह हों, चाहे परमवीर चक्र लैफ्टिनेंट थापा हों, चाहे अशोक चक्र उमेद सिंह हों, नायक भवानी दत्त हों, गजेन्द्र सिंह हों और चाहे बहादुर सिंह बोरा हों, मुझे कहना है कि यदि देश की गौरवशाली परम्परा के लिए राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए अपनी कुर्बानी देने वाली और पूर्ण जनसंख्या का सात प्रतिशत से भी अधिक राष्ट्र के लिए समर्पित होने वाली दो-दो विदेशी सीमाओं का क्षेत्र आज अत्यंत संवेदनशील हो गया है। वहां से लोगों का पलायन हो रहा है। वहां लोग प्रकृति की मार झेल रहे हैं। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि वहां का औसतन एक परिवार से एक व्यक्ति सेना में भर्ती हो कर राष्ट्रीय सीमाओं पर कुर्बानी देता है और उसकी गौरवशाली परम्परा है इसलिए वहां के नवयुवकों को सैन्य और अर्धसैनिक बलों में भर्ती के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाए तथा प्रशिक्षण देने के लिए अलग से संस्थान खोले जाएं। उनके लिए सैनिक स्कूलों की स्थापना की जाए। अभी आपने देखा कि चाहे वह गुजरात का अक्षरधाम रहा हो, चाहे ताज होटल पर आतंकी हमला रहा हो, चाहे संसद पर हो, चाहे दांतेवाड़ा नक्सली हमला हो, प्रथम पंक्ति में उत्तराखंड के उस नौजवान ने अपनी शहादत दे कर राष्ट्र की गरिमा को बढ़ाया है। मैं बहुत विनम्रता से कहना चाहता हूं कि भारत सरकार को इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वहां के नौजवानों को निशुल्क राष्ट्र की सेवा के लिए अधिकारी तैयार करने के लिए संस्थान खोले जाने चाहिए और सैनिक स्कूल खोलने की व्यवस्था करनी चाहिए।

**माननीय अध्यक्ष :** श्री रमेश बिधूड़ी - उपस्थित नहीं।